समझना होगा इन्हें

जो लोग
एक पीले धब्बे को
मान लेते हैं सूरज
ओ सूरज !
तुम उनके लिए
मत चमको।

बहुत गर्व है इन्हें
कि इन्होंने
बना ली है
अपनी अपनी रोशनी
और अब
अँधेरों की चादर
समेटने को
ये
सूरज के मोहताज नहीं।

लेकिन
झूठे दर्प की चकाचौंध में
भूल गए हैं ये लोग
कि
सूरज के बिना
संभव नहीं है
यह धरती
ये पेड़
ये पौधे
ये पक्षी
यहाँ तक कि
अहंकार में अंधे
इन लोगों का
खुद का अस्तित्व भी।

और यह भी
कि
इनकी बनायीं
अनगिनत रोशनियाँ
मिल कर भी
गढ़ नहीं सकतीँ
एक छोटा सा सूरज।

समझना होगा इन्हे

कि एक पीले धब्बे को
सूरज मान लेना
अपराध है।

इनकी भी जिम्मेदारी है
सूरज को देने की
एक चमकीला
नीला आसमान !

स्वरचित कविता
द्वारा
डॉ. पूनम अग्रवाल
प्रोफेसर एवं पूर्व विभागाध्यक्षा
जेंडर अध्ययन विभाग
एन. सी. ई. आर. टी.